DR.PUNAM THAKUR, ASST. PROFESSOR

THE GRADUATE SCHOOL COLLEGE FOR WOMEN JAMSHEDPUR

B. Ed DEPARTMENT

SUBJECT :- PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT SOCIAL SCIENCE

(HISTORY)

SEMESTER-II , PAPER-VII A,

TOPIC- AIMS OF TEACHING HISTORY

Scanned with CamScanner

इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HISTORY)

प्रत्येक विषय के उद्देश्य सामान्य शिक्षा के उद्देश्यों के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं और शिक्षा के उद्देश्य उक्त वर्णित निर्धारकों के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं। हमारे देश में **'माध्यमिक शिक्षा-आयोग'** ने माध्यमिक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये–

1. लोकतान्त्रिक नागरिकता का विकास।
2. नेतृत्व का विकास।
3. व्यक्तित्व का विकास।
4. व्यावसायिक कुशलता का विकास।
5. चरित्र-निर्माण आदि।

उक्त समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति किसी एक विषय के अध्ययन द्वारा नहीं हो सकती। परन्तु इतिहास-शिक्षण इन उद्देश्यों की प्राप्ति में बहुत सहायक है। यह सत्य है कि इतिहास प्रत्यक्ष रूप से रोटी तथा मक्खन देने वाला विषय नहीं है, परन्तु इसके द्वारा छात्रों के चरित्र-निर्माण, नेतृत्व, नागरिकता के गुणों आदि के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया जाता है।

शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कालों में इतिहास-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया। उदाहरणार्थ–**लीवी** (Livy) तथा **थ्यूसीडाइड्स** (Thucydides) के समय में इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य स्मरणीय वस्तुओं को सुरक्षित रखना तथा महत्त्वपूर्ण घटनाओं का ज्ञान पुरानी सन्तति द्वारा नवीन सन्तति को सौंपना था। प्राचीनकाल में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य निर्देश देना या आश्रयदाताओं को प्रसन्न रखना तथा दोनों; अर्थात् निर्देश देना तथा आश्रयदाताओं को प्रसन्न रखना था। मध्यकाल में इसका उद्देश्य अपने देश के अतीत के लिए आदत तथा प्रेम उत्पन्न करना हो गया। आधुनिक काल में इसका प्रमुख उद्देश्य अतीत की सहायता से

Scanned with CamScanner

वर्तमान को स्पष्ट करना माना गया। इसके अतिरिक्त सत्य, देश-प्रेम, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास आदि भी इसके उद्देश्य माने गये।

हम इतिहास-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों का विवेचन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत करेंगे—

(अ) इतिहास-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य।

(ब) इतिहास-शिक्षण के मुख्य उद्देश्य।

(अ) इतिहास-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य (General Aims of Teaching History)

(1) इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न करना (To Create Interest for History)—विभिन्न विद्वानों ने इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न करना माना है। जॉन डीवी (John Dewey) का मत है—**"हमारी इतिहास में इसलिए रुचि नहीं है कि वह अतीत के गौरव को बताता है, बल्कि इसमें इसलिए रुचि है क्योंकि इसके द्वारा वर्तमान सामाजिक जीवन के विभिन्न स्वरूपों तथा शक्तियों का स्पष्टीकरण किया जाता है। साथ ही यह हमें भविष्य के विषय में सोचने के लिए तैयार करता है।"** इस कारण इतिहास के शिक्षक का यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह छात्रों में इतिहास के प्रति रुचि जाग्रत करे। वस्तुतः यह वर्तमान ही है जो हमें अपनी ओर आकर्षित करता है और हम उसे जानने के लिए तत्पर होते हैं। इसी कारण हम अतीत की खोज करता हैं। हम अतीत की खोज इस कारण नहीं करते हैं कि हमें ऐसा करना रोचक मालूम पड़ता है वरन् इसलिए करते हैं कि आज के मानव के विचारों एवं कार्यों की जड़ अतीत में निहित है। अतः इतिहास के शिक्षक को छात्रों के समक्ष अतीत के इतिहास द्वारा वर्तमान को स्पष्ट करके उनमें इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न करनी चाहिए।

(2) वर्तमान को स्पष्ट करना (To Explain the Present)—इतिहास-शिक्षण का एक उद्देश्य वर्तमान को स्पष्ट करना है। कार्ल ऑगस्त मुलर का मत है, "इतिहास द्वारा हम अपने काल की क्रियाओं का अर्थ लगा सकते हैं। यदि इतिहास नहीं होगा तो विद्यालय अध्ययन तथा अध्यापन निरर्थक है, क्योंकि इतिहास हमारे वर्तमान को स्पष्ट करता है।" इतिहास के अभाव में सामाजिक वातावरण का कोई अर्थ नहीं है। अतः बालक को समाज में व्यवस्थित होने के लिए अपने सामाजिक वातावरण या अपनी प्रचलित परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः अतीत द्वारा इस सामाजिक वातावरण को अर्थपूर्ण बनाया जाता है। इसी कारण इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य वर्तमान को स्पष्ट करना माना गया है।

(3) मानसिक शक्तियों का विकास (Development of Mental Powers)—इतिहास द्वारा छात्रों को एक विशेष प्रकार की मानसिक शिक्षा प्रदान की जाती है जो विद्यालय के किसी अन्य विषय द्वारा प्रदान नहीं की जा सकती है। इसके अध्ययन से

Scanned with CamScanner

छात्रों की स्मरण, कल्पना, तर्क, निर्णय आदि मानसिक शक्तियों के विकास में बहुत सहायता मिलती है। छात्र इसके द्वारा विभिन्न विवादास्पद प्रश्नों एवं समस्याओं के विषय में अपना स्वतन्त्र निर्णय बनाने में समर्थ हो जाता है। अतः इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास करना माना गया है।

(4) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Scientific Outlook)—विद्वानों का मत है कि इतिहास-शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण करना होना चाहिए। उनका मत है कि इसके लिए इतिहास का अध्यापन इस प्रकार किया जाय जिससे वे अवैज्ञानिक वस्तुओं को त्यागने में समर्थ हो सकें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिए उनकी निरीक्षण शक्ति, तर्क शक्ति तथा सत्य निर्णय करने की शक्तियों का विकास करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त छात्रों को निष्पक्षता एवं योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित, वर्गीकृत एवं तुलना करने के योग्य बनाया जाय।

(5) राष्ट्रीय भावना का विकास (Development of National Feeling)—इतिहास-शिक्षण का एक अन्य उद्देश्य राष्ट्रीय भावना का विकास माना गया है। बहुत-से विद्वान देश-प्रेम की भावना के विकास को इतिहास-शिक्षण का एक मूल्य मानते हैं। वस्तुतः विभिन्न देशों एवं विभिन्न कालों में देश-प्रेम की भावना का विकास इतिहास-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य रहा है। जर्मनी ने अपने विद्यालयों के पाठ्यक्रम में इतिहास को महत्त्वपूर्ण स्थान इसीलिए प्रदान किया था कि इसके द्वारा छात्रों में देश-भक्ति की भावना का विकास सरलता से किया जा सकता है। इतिहास छात्रों को उनके पूर्वजों की देनों का ज्ञान प्रदान करके उनमें देश-भक्ति की भावना विकसित करता है।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास (Development of International Understanding)—इतिहास-शिक्षण का एक अन्य उद्देश्य—छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्रों को निष्पक्षता तथा सच्चाई के साथ प्रत्येक देश की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जाना आवश्यक है। **सी. पी. हिल** (C. P. Hill) ने लिखा है कि इतिहास-शिक्षक इस विषय का अध्यापन इस प्रकार करे जिससे छात्र 'सत्य' की खोज के लिए तत्पर हो सकें तथा वे विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों एवं प्रभावों और उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने में समर्थ हो सकें। इस प्रकार के ज्ञान से उनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सकता है।

(ब) इतिहास-शिक्षण के मुख्य उद्देश्य (Specific Aims of Teaching History)

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों को रखा जा सकता है—

(1) ऐतिहासिक विधि का ज्ञान कराना।

(2) समय-ज्ञान की भावना को विकसित करते हुए स्थान तथा समय में सम्बन्ध स्थापित करना।

(3) मानव-उन्नति का काल-क्रम के अनुसार अध्ययन करना।

Scanned with CamScanner

(4) छात्रों को उन समस्याओं तथा कठिनाइयों से अवगत कराना जो मानव के समक्ष उसके सामाजिक विकास में आयी थीं।

(5) छात्रों को इतिहास का ज्ञान इस प्रकार प्रदान करना जिससे उनमें निम्न प्रकार के भाव उत्पन्न हो सकें—

(i) सूचनाएँ कहाँ और किस प्रकार प्राप्त की जायें ?

(ii) प्रमाणों को किस प्रकार जाँचा जाय ?

(iii) तार्किक निष्कर्ष किस प्रकार निकाले जायें ?

(iv) तथ्यों को किस प्रकार संगठित, विश्लेषित एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय।

वर्तमान परिस्थितियों में भारत में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HISTORY IN PRESENT CONDITIONS OF INDIA)

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत ने राष्ट्रीय विकास के लिए धर्म-निरपेक्षता, लोकतन्त्र, समाजवाद तथा शान्ति को निर्देशक सिद्धान्तों (Guiding Principles) के रूप में ग्रहण किया है। इतिहास का अध्ययन करते समय इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाना परमावश्यक है। परन्तु वास्तविकता कुछ और है। आजकल इतिहास के अध्यापन और उसकी पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में इन स्वीकृत सिद्धान्तों का किसी भी प्रकार से प्रयोग नहीं किया जा रहा है। इस समय इतिहास के अध्यापन में राजनैतिक इतिहास, युद्धों, संधियों तथा ऐतिहासिक चरित्रों के वर्णन पर अधिक बल दिया जाता है, जबकि आवश्यकता इस बात की है कि इसके अध्यापन द्वारा सामाजिक विकास की समझदारी पर बल दिया जाए, क्योंकि इसके माध्यम से छात्रों में इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न की जा सकती है। साथ ही उनके दृष्टिकोण को व्यापक एवं उदार बनाया जा सकता है। आज साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता तथा धार्मिक कट्टरता एवं धर्मान्धता ने इतिहास के अध्यापन को प्रभावित करके राष्ट्रीय इतिहास के वास्तविक चित्र को धूमिल बना दिया है। साथ ही इन्होंने संकीर्ण भावनाओं को विकसित करने में सहयोग दिया है।

हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहुआयामी है, इसलिए शिक्षा द्वारा उन सार्वजनीन और शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो लोगों को राष्ट्रीय एकता की ओर ले जा सकें। इसके लिए शिक्षा-क्रम या पाठ्यक्रम (Curriculum) में भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, संवैधानिक जिम्मेदारियाँ तथा राष्ट्रीय अस्मिता से सम्बन्धित अनिवार्य तत्त्व शामिल किये जायें।

भारत ने विभिन्न देशों में शान्ति और आपसी भाईचारे के लिए सदैव प्रयास किया है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्शों को सँजोया है। इस परम्परा के अनुसार शिक्षा-व्यवस्था का प्रयास यह होना चाहिए कि नई पीढ़ी में विश्वव्यापी दृष्टिकोण सुदृढ़ हो तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना बढ़े।

Scanned with CamScanner

उक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इतिहास-शिक्षण के निम्नलिखित प्राप्य उद्देश्यों (Objectives) पर बल दिया जा सकता है–

(1) छात्रों को यह अनुभूति करायी जाय कि इतिहास सामाजिक परिवर्तन तथा विकास की प्रक्रिया का अध्ययन है।

(2) छात्रों को आधुनिक समाज, जिसमें वे रह रहे हैं, का ज्ञान प्रदान किया जाय।

(3) छात्रों को देश की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक निर्बलताओं से अवगत कराया जाय। साथ ही उन्हें दूर करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(4) छात्रों में सत्य देश-प्रेम की भावना का विकास किया जाय। इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय विरासत (National Heritage) की समझदारी प्रदान की जानी चाहिए। उनको यह बताया जाय कि इस विरासत का विकास किस प्रकार हुआ है। हमने विभिन्न जातियों, धर्मों तथा संस्कृतियों को अपनी विरासत में किस प्रकार मिलाया ?

(5) छात्रों को राष्ट्रीय विरासत के साथ-साथ माननीय विरासत से भी अवगत कराया जाय जिससे उनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सके।

(6) छात्रों को भारतीय संस्कृति की विविधता एवं एकता से अवगत कराया जाय।

(7) छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन का विकास किया जाय।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HISTORY AT THE DIFFERENT STAGES OF EDUCATION)

1. प्राइमरी स्तर पर उद्देश्य (Aims at Primary Stage)–इस स्तर पर इतिहास-शिक्षक को निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर विषय का प्रतिपादन करना चाहिए–

(अ) इतिहास के प्रति छात्रों की रुचि जाग्रत करना। रुचि को जाग्रत करने के लिए अधिक सूचनाएँ प्रदान न की जायें और न इसके मस्तिष्क पर परीक्षा का निरर्थक भार डाला जाय।

(ब) ऐतिहासिक कल्पना जाग्रत करना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक को कहानियों द्वारा शिक्षण प्रदान करना चाहिए, क्योंकि इस स्तर पर बालक कहानीप्रिय होता है।

(स) छात्रों को इस बात से परिचित कराना कि हमारे प्रतिदिन के जीवन पर अतीत का प्रभाव होता है।

Scanned with CamScanner

(द) छात्रों में समय-ज्ञान को धीरे-धीरे विकसित करना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक स्थूल वस्तुओं का उपयोग करें; उदाहरणार्थ—समय-चार्ट, समय-रेखा आदि।

(य) छात्रों में देश-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास करना। इस स्तर पर विश्व-इतिहास से भी कहानियाँ ली जायें। उनके शिक्षण से उनमें विश्व-बन्धुत्व के अंकुर उत्पन्न किये जा सकते हैं।

2. **जूनियर स्तर पर उद्देश्य** (Aims at Junior Stage)—इस स्तर पर इतिहास-शिक्षक को निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए, यथा—

(अ) इस स्तर पर छात्रों में इतिहास के लिए वास्तविक प्रेम उत्पन्न करना चाहिए। इसके लिए राजनैतिक इतिहास के स्थान पर सामाजिक इतिहास के अध्ययन पर बल दिया जाय।

(ब) छात्रों को शुद्ध रूप से विचार करने के लिए तत्पर बनाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनकी अन्य मानसिक शक्तियों को विकसित करना चाहिए।

(स) उनको ऐतिहासिक तथ्यों एवं कार्यों की आलोचना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(द) इस स्तर पर छात्रों को अतीत के प्रकाश में अधिक से अधिक वर्तमान को समझने के योग्य बनाना। इसके अतिरिक्त उन्हें भविष्य के विषय में भी सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(य) छात्रों में समय-ज्ञान को विकसित करने के लिए अमूर्त साधनों का भी उपयोग करना चाहिए।

(र) छात्रों में सत्य देश-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकसित किया जाय।

(ल) मानचित्र पर घटनाओं सम्बन्धी स्थलों तथा राज्य-सीमा का ज्ञान कराकर भौगोलिक स्थिति से परिचित कराना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक को इतिहास का भूगोल से सम्बन्ध स्थापित करके शिक्षण प्रदान करना चाहिए।

3. **हायर सेकेण्डरी स्तर पर उद्देश्य** (Aims at Higher Secondary)—इस स्तर पर इतिहास-शिक्षण को निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छात्रों को तत्पर बनाना चाहिए—

(अ) इस स्तर पर छात्रों में इतिहास के लिए वास्तविक रुचि को दृढ़ बनाना।

(ब) छात्रों को मानसिक प्रशिक्षण प्रदान करना, अर्थात् उनकी मानसिक शक्तियों को एक मुख्य प्रकार से प्रशिक्षित करना, जिससे उनकी तर्क एवं निर्णय-शक्तियों का पर्याप्त विकास हो सके जिससे वे प्रत्येक तथ्य को तर्क तथा प्रमाणों के आधार पर ही स्वीकार करना सीख जायें।

(स) राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृतियों का ज्ञान प्रदान करना जिससे वे अपने देश की विश्व-संस्कृति के लिए प्रदान की गई देनों को समझ सकें।

Scanned with CamScanner

(द) अतीत के आधार पर वर्तमान को समझने की क्षमता उत्पन्न करना तथा उसके भविष्य के आकलन के लिए सामर्थ्य उत्पन्न करना।

(य) विकास के सिद्धान्त से अवगत कराना।

(र) समय-ज्ञान के विकास को दृढ़ बनाना।

(ल) छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना।

(व) राष्ट्र की सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक समस्याओं से अवगत कराकर उनको स्वयं समस्या हल करने के योग्य बनाना।

(श) मानव सभ्यता के विकास की विशेषताओं से अवगत कराना।

Scanned with CamScanner